विश्व न्याय मन्दिर

26 मार्च 2016

अब्दुल-बहा की ’दिव्य योजना की पातियों’ को

प्राप्त करने वाले चुनिन्दा जनों को,

संयुक्त राष्ट्र के बहाईयों और कनाडा के बहाईयों के प्रति

परमप्रिय मित्रों,

दिव्य योजना के ’रचयिता’ ने जिन लोगों को एक पवित्र दायित्व के लिए चुना था और जिन लोगों की विजयों और वेदनाओं ने पिछली शताब्दी के अधिकांश समय को उस रचयिता की अपेक्षाओं के अनुरूप रूपाकार दिया, विश्वव्यापी बहाईयों के प्रति हमारे संदेश में -- उन लोगों के प्रति दो शब्द कहे बिना हम इस ऐतिहासिक महत्व को यूं ही गुजरने नहीं दे सकते।

बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण के तुरंत बाद, अब्दुल-बहा ने यह निश्चय किया कि उनके धर्मनेतृत्वकाल के प्रमुख उद्देश्यों में से एक यह होगा कि ‘उनके पिता’ की धर्म-ध्वजा तले, उत्तरी अमेरिका में एक समुदाय की स्थापना की जाए। उन्होंने शिक्षकों को रवाना किया, तीर्थयात्रियों को प्रकाशित किया, अपनी उस वृद्धावस्था में भी एक अभूतपूर्व यात्रा पर निकल पड़े, आपके बहाई उपासना मन्दिर का शिलान्यास किया, चैदह ’पातियों’ में अंकित करके आपको एक दिव्य ध्येय देते हुए सम्बोधित किया, और “अपने हृदय की विपुलता से, अपने जीवन के अन्तिम दिनों में, अपने प्रियपात्र शिष्यों को अपनी अचूक कृपा के संकेत-चिह्न प्रदान किये।“ बाद में एक ऐसे समय जबकि प्रभुधर्म की ’जन्मभूमि’ में निवास करने वाले धर्मानुयायी यातनाओं से घिर गए थे, जब यूरोप में प्रभुधर्म के प्रकाश पर एक अन्य युद्ध की पैशाचिक छाया मण्डराने लगी थी, जब मध्य एशिया का सबसे जीवन्त केन्द्र तहस-नहस हो गया था और यहाँ तक कि स्वयं प्रभुधर्म का विश्व केन्द्र पवित्र भूमि में फैली हुई ज्वाला से बाधित हो गया था, तो एक “बचा हुआ प्रमुख दुर्ग”, वह “शक्तिशाली भुजा” जिसने उस समय भी “एक अपराजेय धर्म की ध्वजा” को ऊँचा फहराया था, वे थे शोग़ी एफ़ेन्दी जिन्होंने और किसी पर नज़र नहीं डाली बल्कि “उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में ’महानतम नाम’ के अनुयायियों के आशीर्वादित समुदाय”

पर। उन्होंने आपको -- योजना के मुख्य कार्यवाहकों और सह-संचालकों को -- बहाउल्लाह के अदम्य सेनानियों की अगली कतार में रखा था।

यहाँ पिछली शताब्दी के दौरान आपके द्वारा प्राप्त की गई महत्वपूर्ण उपलब्धियों के दायरे का विवरण प्रस्तुत कर पाना सम्भव नहीं है। आप पहले ही ऐसी उपलब्धियाँ हासिल कर चुके हैं जिनकी सराहना करना और जिनके लिए आभारी होना समस्त बहाई विश्व के लिए सुयोग्य है, लेकिन अभी भी आपका ध्येय पूर्णता से बहुत दूर है। शताब्दी भर के अपने दृढ़ कार्यों के बाद आपको पहले से भी कहीं ज्यादा उस सीधे मार्ग को पहचानने योग्य होना चाहिए जिसे 1937 में, दिव्य योजना के सुनियोजित क्रियान्वयन के अनेक चरणों से लेकर अब तक दिव्य प्रेरणा द्वारा तराशा गया है, और इस तरह उस नवीनतम चरण के सम्पूर्ण अभिप्रायों को समझना चाहिए जो प्रकट होने वाला है। आपके सामने जो दायित्व पड़े हैं वे पिछले युग के दायित्वों के समान नहीं हैं। प्रभुधर्म के अन्तर्राष्ट्रीय प्रसार के बाद अब होमफ्रंट के मोर्चे पर आपके सामने बहुत बड़ी मांग आ खड़ी हुई है। समूहों द्वारा प्रवेश की जो प्रक्रिया “दस वर्षीय धर्मयोजना” के समय अस्पष्ट रूप से उभरकर सामने आई थी, और बाद के दशकों में जिसका अनुसरण किया गया था, अब उसे एक के बाद एक उन सभी देशों-प्रदेशों, जिन्हें अब्दुल-बहा ने बहुत पहले चिह्नित किया था, के कई केन्द्रों में समुदाय निर्माण की एक सुदृढ़ प्रक्रिया के माध्यम से विस्तारित किया जा रहा है। आपके सहयोगी समुदाय, जिनमें से कई की स्थापना में आपने सहयोग दिया था, अब परिपक्व हो चुके हैं, और आप सामने पड़ी ज्यादा कठोर चुनौतियों का सामना करने के लिए उनके साथ तैयार खड़े हैं। ज्ञान के सुदूर सीमान्तों तक आपके क्लस्टरों के विस्तार से वह समय प्रस्तुत होगा जिसकी पूर्वकल्पना शोग़ी एफ़ेन्दी ने आपके सामूहिक प्रयासों के आरम्भ में की थी, वह समय जबकि आपके द्वारा निर्मित समुदाय भ्रष्टता, नैतिक शिथिलता एवं समाज के मूल पर प्रहार करने वाले निहित पूर्वाग्रहों से प्रत्यक्ष रूप से लड़ेंगे और अन्ततः उन्हें उखाड़कर रख देंगे।

यह आनन्द मनाने का समय है। उन अनेक समर्पित आत्माओं के बलिदानों और उनकी विजयों पर गर्व कीजिए जो अब्दुल-बहा के आह्वान के प्रत्युत्तर में उठ खड़े हुए थे। आपके पूर्वजों द्वारा दर्शाई गई त्याग की उसी चेतना के साथ, उस संसार की व्यर्थ कल्पनाओं व विचलनों को उठा फेंकिए जो अपना रास्ता भटक चुका है, ताकि अगले पाँच वर्षों में आप स्वयं को एक आध्यात्मिक उपक्रम के नवीनतम चरण के उन अमूल्य अवसरों और अपरिहार्य कर्तव्यों के लिए समर्पित कर सकें, जिन पर अन्ततः मानवजाति की नियति निर्भर करती है।

-विश्व न्याय मन्दिर